यह है पांडवों की सभा। अभी यह बच्चों को प्रैक्टिकल में अनुभव होता है, जिस मात–पिता को याद करते थे, बालक तो सब परमात्मा के ही हैं। बाप रचना रचते हैं तो माता भी चाहिए। मात–पिता, हम बालक तेरे। यह बालक बैठे हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं सब। यह हुई प०पि०प० की नई रचना। हम हैं ईश्वरीय संतान प्रैक्टिकल में। बच्चे समझते हैं हम प०पि०प० शिव से वर्सा लेते हैं। वह हुआ सबका बाबा, बाकी सब रचना हुई रचता की। रचता बाप, बाकी सब रचना। मनुष्य रचना हो गई। तो मनुष्य, मनुष्य को पतित से पावन नहीं बना सकते। तुम जानते हो, हम शिवबाबा के पौत्रे–पौत्रियाँ हैं, वर्सा मिलता है शिवबाबा से। ब्रह्मा और बी०के० सबको वर्सा शिवबाबा से मिलना है। अभी सब दुखी, पतित हैं। जो भी मनुष्य मात्र हैं सब पतित हैं। पतित दुनिया को पावन बनाने वाला एक बाप है। बाप भी एक, उनकी रचना भी एक। इस समय सब पतित हैं। सतयुग में भारतवासी देवी–देवताएँ पावन थे। उस समय और कोई धर्म था नहीं। बाप कहते हैं, मैं आकर ब्रह्मा द्वारा पावन बनना सिखलाता हूँ। यह है वैश्यालय। सतयुग है शिवालय, शिव का स्थापन किया हुआ शिवालय। अभी रौरव नर्क है, मनुष्य एक/दो से लड़ते–झगड़ते हैं। माता बिगर कब मुक्ति–जीवनमुक्ति पाय नहीं सकते। यहाँ कोई अंधश्रद्धा की बात नहीं। सन्यासी आदि से कुछ मिल नहीं सकता। करके अल्प काल क्षण भंगुर शांति मिलेगी। खुद ही शांति के लिए भागते रहते हैं। शांति का सागर बाप है। तो तुम हो गॉड फादर के ग्रैंड चिल्ड्रन। यहाँ है पढ़ाई। और सब हैं अंधश्रद्धा। बाप कहते, (जप–तप), दान–पुण्य करने से मेरी प्राप्ति नहीं हो सकती। हम ही आए काँटे (से) फूल बनाते हैं। भारत हैविन था, अब हेल बना है। भारत देवी–देवताओं की राजधानी थी, अभी असुरों की राजधानी है। यहाँ आते हैं मनुष्य से देवता बनने। इसमें अंधश्रद्धा की बात नहीं। और सब जगह है अंधश्रद्धा, प्राप्ति कुछ भी नहीं। समझते, गंगा पतित–पावनी है; इसलिए गंगा नदी में जाते हैं स्नान करने, पावन बनने। पानी तो पावन कर न सके। यह सब हैं गपोड़े, करप्शन। पैसा बनाने की युक्ति है। सन्यासी घर–बार छोड़ते हैं। वह है हद का सन्यास, तुम्हारा है बेहद का सन्यास। तुम जानते हो, नई दुनिया स्थापन हो रही है, उसके हम मालिक बनेंगे। पवित्र बनना है। विख नहीं पिलाना है। गुरुनानक ने भी कहा है– असंख्य चोर हराम घोर, अब जप साहब तो सुख मिले। तुम भी अब बाप और वर्से को याद करते हो प्रैक्टिकल में। तुम आए हो शिवबाबा पास। शिवबाबा इन द्वारा पढ़ाते हैं। यह आत्मा के ऑरगन्स हैं। अब बाप कहते, अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। बाकी अंधश्रद्धा की बात नहीं कोई। तुम काल पर जीत पहनते हो महाकाल द्वारा। स्वर्ग में अकाले मृत्यु नहीं होती, खुशी से जब समय पूरा होता है तो चोला छोड़ देते हैं। यह है ही रोने की दुनिया। वह है एवर हँसने की दुनिया। वहाँ विधवा कोई बनती नहीं, खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। हम स्टीमर से जा रहे हैं, सामने वैकुण्ठ के झाड़ दिखाई पड़ रहे हैं। बी०के० सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी का मालूम है। बच्चे जानते हैं, पुरानी दुनिया में पुरानी देहली को फिर नई दुनिया में, नई देहली बनाना है। फिर देहली का नाम परिस्तान रहेगा। अब देहली कब्रिस्तान है, तुम बच्चियाँ फिर परिस्तान बना रही हो। तुम धर्मराज के बच्चे हो। धर्म का राज करने वाले को भी धर्मराज कहते हैं। तुम बहुत धर्म करते हैं स्वर्ग का महाराजा बनने लिए। तन–मन–धन सबसे धर्म करती हो। भारत में दान बहुत होता है। इस समय तुम बेहद का दान करते हो, बेहद का महाराजा–महारानी बनते हो। दान करना यानी अपन को इंश्योर करना। बहुत दान करने वाली पांडव सेना हो। बाबा भी बहुत दान देते हैं। तुम्हारी कितनी बड़ी सभा है– ज्ञान सूर्य, ज्ञान चंद्रमा, ज्ञान लकी सितारे। उनमें मुख्य लकी सितारा है– मम्मा। अच्छा, गुडनाइट। ॐ